Hill Quest: A Multidisciplinary, National Refereed/Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 11, Issue 02, July-December 2024
http://hillquest.pratibha-spandan.org | © The Author(S) 2024

विद्यापति के काव्य-साहित्य का संगीत की दृष्टि से विश्लेषणात्मक अध्ययन

DR. MEENAKSHI MAHAJAN

Associate Professor, Department of Music, Fateh Chand College for Women, Hisar, Haryana, India

सार

विद्यापति एक महान कवि, संगीतज्ञ एवं संत थे। इन्होंने अपने जीवन काल में बहुत से काव्य-साहित्य की रचना संस्कृत अवहद्द तथा मैथिल भाषा में की जिनमें पदावली ही उनकी एकमात्र ऐसी रचना है जिसका मूल्यांकन संगीत शास्त्र की कसौटी पर खड़ा उतरता है। भारतीय संगीत के मूल तत्व नाद, श्रुती, स्वर, भाव, रस, अलंकार, छंद, सप्तक एवं गायन की विभिन्न शैलियों के अनुरूप उनके पदों को बांधा गया। ध्रुवपद, ख्याल, लोकगीत शैली के अनुरूप उनके पद मिलते हैं। पदावली में संगीत शास्त्र के सभी नियम पूरी तरह से लागू होते हैं। मात्रिक छंदों का प्रयोग होने के कारण ही सभी शैलियों में इनके पद गाए गए। बहुत से समकालीन रागों का वर्णन भी पदावली में मिलता है। जो इनके शास्त्रीय संगीत मर्मज्ञ होने के बारे में बताता है।

विशेष शब्द: *पदावली, मात्रिक छंद, समकालीन राग*

भूमिका

भारतीय काव्य शास्त्र और संगीत शास्त्र का अटूट संबंध हैं। भारतीय काव्य साहित्य संगीत से अलग नहीं है क्योंकि दोनों का उद्देश्य रस निष्पत्ति, गति-प्रवाह, लोक कल्याण, आध्यात्मिक, मोक्ष प्राप्ति, समाज में नवचेतना का जागरण कराना हैं। दोनों के प्रेरणास्रोत वेद हैं। इन्हे संगीत शास्त्र की प्रेरणा सामवेद से प्राप्त हुई और काव्य शास्त्र की अन्य वेदों से प्राप्त हुई।

विद्यापति महान प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हुए हैं। उन्होंने संस्कृत, अपभ्रंश और मैथिल भाषा में रचनाएं करके साहित्य जगत को समृद्ध किया है। विद्यापति का समस्त काव्य-साहित्य दो श्रेणियों में विभक्त है। कुछ समीक्षक उन्हें भक्ति धारा के अंतर्गत मानते हैं और कुछ श्रृंगारिक कवि के रूप में और कुछ इन्हें दोनों रूपों में समान मान्यता देते हैं। विद्यापति के समस्त काव्यों का अवलोकन करने पर पता चलता है कि वे एक ऐसे कवि थे जो श्रृंगार पक्ष को लेकर आध्यात्म की सघनता में बढ़ते पाए जाते हैं। विद्यापति ने श्रृंगार के सहारे भक्ति मार्ग पर चलना सीखा है। वास्तव में विद्यापति श्रृंगार और भक्ति दोनों ही काव्य धाराओं के महान कवि थे। उनकी साहित्यिक रचनाओं में श्रृंगार और भक्ति के एक साथ दर्शन होते हैं। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से जहां एक और लोकमंगल की कामना की, वहीं दूसरी और कलात्मक सृष्टि करके साहित्य और कला को एक सूत्र में बांधने का सफल प्रयास किया। विद्यापति ने राधा-कृष्ण के प्रसंग लेकर विभिन्न नवीन मौलिक चित्र प्रस्तुत किए हैं जो संगीत और साहित्य दोनों की दृष्टि में अद्वितीय हैं। इनका काव्य जहां अपने पूर्ववर्ती सिद्धांतों से प्रेरित है वही अपने परवर्ती सिद्धांतों के लिए प्रेरणादाई है।विद्यापति के बाद का समस्त परवर्ती काव्य किसी ना किसी रूप में विद्यापति से प्रभावित है।

विद्यापति की मुख्य रचनाएँ

संस्कृत ग्रंथ :

- भू-परिक्रमा : इस पुस्तक को विद्यापति ने राजा देवसिंह के आदेशानुसार लिखा था। इसमें उन कथाओं का वर्णन है जो बलराम जी को श्राप की अवधि में मिथिला में सुनाई गई थी।
- लिखनावली : इस ग्रंथ की रचना राज बलोती के राजा पुरादित्य की आज्ञा से विद्यापति ने की। इसके अंतर्गत पत्र लेखन की विभिन्न शैलियों का निर्देश किया है।
- शेवसर्वस्वसार प्रमाणभूत प्रमाण संग्रह : इन ग्रंथो के अंतर्गत समस्त प्रमाणों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- गंगा वाक्यावली : इस ग्रंथ में गंगा के पूजन की विधियों का वर्णन किया गया है।

- विभागसार: इस ग्रंथ में विविध देवताओं के लिए उपयोगी सामग्री है।
- दानवाक्यावली : इस ग्रंथ में अष्ट रोग तथा समकालीन वस्त्रों एवं दान के लिए विभिन्न प्रकार की विधियों का उल्लेख है।
- दुर्गा भक्ति तरंगिणी: इस ग्रंथ में महादेवी दुर्गा की पूजन विधि, महिमा आदि का वर्णन प्राप्त होता है।
- वर्ष वृत्य : इस ग्रंथ के अंतर्गत वर्ष के प्रत्येक शुभ कार्यों का तथा व्रत पूजा आदि के नियम बताए गए हैं।

अपभ्रंश (अवहट्ट) ग्रंथ:

- कीर्तिलता : इस ग्रंथ में कीर्तिसिंह का योगदान कविवर विद्यापति ने बताया है। इस ग्रंथ में संस्कृत, प्राकृत एवं पालि भाषाओं के शब्दों का प्रभाव दिखाई देता है।
- कीर्तिपताका : यह ग्रंथ खण्डित है। इस ग्रंथ में महाराजा शिव सिंह की कीर्ति पताका का बड़ा सुंदर वर्णन कवि ने किया है। ग्रंथ के आरंभ में चंदमूड शिव के अर्धनारिश्वर स्वरूप का सुंदर वर्णन है। तदोपरान्त गणेश वंदना की गई है। इसकी रचना दोहा, छंद तथा गद्य में की गई है।

मैथिली भाषा का ग्रंथ

प्रस्तुत ग्रंथ विद्यापति के संपूर्ण जीवन का परिणाम है। विद्यापति द्वारा रचित बाल्यावस्था से अंतिम मरणावस्था तक के पदों का इनमें संग्रह किया गया है। पदावली के पदों की मूल रूप से सुरक्षा मिथिला की स्त्रियों द्वारा ही की जा रही है। यह ग्रंथ उन्होंने मैथिली भाषा में लिखा है। संस्कृत ग्रंथों में उन्होंने उद्देश्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। इनमें उपदेश निर्देश तथा वर्णन करते हुए विद्यापति पाए जाते हैं। अवहद्द भाषा के ग्रंथों में उन्होंने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। मैथिली भाषा में पदावली की रचना की है। पदावली में 6 प्रकार के लोकगीत शैली में लिखे पद प्राप्त होते हैं। तिरहुति, बटगमनी, रास, मानव, समदौनी। परंतु कवि ने बटगमनी शैली का प्रयोग अधिक किया है।

"'पदावली' का प्रत्येक पद संगीत के साँचे में ढला हुआ है। विद्यापति ने 'गीत - गोविंद' का अनुसरण अपने पदों में किया है। इसी कारण उनमें संगीतात्मक गुण ध्वनित होता है। क्योंकि गीत गोविंद के गीत, संगीत शास्त्र के लक्षणों से परिपूर्ण थे प्रोफेसर कृष्ण देव शर्मा एक स्थान पर लिखते हैं। महाकवि विद्यापति के पद संगीत शास्त्र के भी अत्यंत अनुकूल जान पड़ते हैं। विद्यापति के पद गेयत्व की दृष्टि से सफल थे।"[1]

पदावली के पदों में विशेष गति है। साथ ही इन पदों में गीति काव्य के भी लक्षण विद्यमान है। जिसके फलस्वरुप इनमें गेयता है। संगीत के अन्य गुण जैसे रस, छंद, सौंदर्य, लालित्य आदि भी पदावली के प्रत्येक पद में प्राप्त होते हैं। जिनसे उन पर संगीत शास्त्रीय अधिकांश लक्षण घटित हो जाते हैं। विद्यापति रचित पदावली में भावनाओं की सघनता एवं संगीतात्मकता उसमें विद्यापति द्वारा लोकोक्तियों के प्रयोग से और बढ़ गई है। लोकोक्तियों में एक प्रकार का प्रवाह होता है जिसे स्वर -ताल बद्ध करके गया जा सकता है। पदावली में लोकोक्तियों की प्रचुरता के संबंध में डॉक्टर पीयूष लिखते हैं।

"विद्यापति की कविताओं में भाव संबंधी जो विशेषताएं हैं उनका किंचित निर्देशन किया जा सकता है परंतु इनमें भावों के अतिरिक्त एक और भी अंश है जो विद्यापति की ख्याति का कारण हुआ है। यह अंश है उनकी लोकोक्तियां। यह उक्तियां इतनी अच्छी तथा व्यापक है कि प्राय: उनके प्रयोग होते रहते हैं और कहावतें की भांति लोग उनसे लाभ उठाते हैं।"[2] निष्कर्ष रूप में यह स्पष्ट होता है कि विद्यापति की पदावली ही कवि की एकमात्र रचना है जिसमें काव्यशास्त्र और संगीत शास्त्र के संपूर्ण सिद्धांत घटित होते हैं।

विद्यापति की काव्य रचनाओं का सांगीतिक अध्ययन

विद्यापति द्वारा रचित समस्त काव्य धाराएं संगीत के प्रमुख तथ्यों की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। कुछ रचनाएं मात्रा लय प्रधान है जिनके छंदों में लयात्मकता तो अवश्य दृष्टिगोचर होती है परंतु स्वरूपात्मकता नहीं प्राप्त होती है। इसलिए उनका गायन संभव नहीं।

जैसे: कीर्ति लता, कीर्तिपताका, शैवसर्वस्वार दानवाक्यावली, दुर्गाभक्ति, तरंगिणी, लिखनावली आदि रचनाएँ पूर्ण रूपेण संगीतमय नहीं। इनके अंतर्गत यदि कहीं गेय पद आ गए हैं तो उन पर अवश्य संगीत के मूलभूत तत्व घटित होते हैं, अन्यत्र नहीं। विद्यापति की पदावली एक ऐसी कृति है जो संगीत शास्त्र के मूल तथ्यों की कसौटी पर खरी उतरती है और उस पर संगीत के मूल तथ्य घटित किये जा सकते हैं।

संगीत शास्त्र की दृष्टि से विद्यापति की पदावली का अध्ययन

विद्यापति पदावली का संगीत के शास्त्रीय आधारों को दृष्टि में रखते हुए अध्ययन किया जाए तो उसके अंतर्गत संगीत के मूल सिद्धांत घटित हो जाते हैं।

- नाद की दृष्टि से - विद्यापति पदावली कवि की एक ऐसी मधुर कल्पना कृति है जिसमें विद्यापति ने मधुर शब्द-ध्वनियों का प्रत्येक छंदों में प्रयोग किया है। इसी माधुर्य गुण के कारण विद्यापति पदावली संगीतमय सिद्ध हुई है तथा संगीत में गृहीत मधुर नादों के नितांत समीप है। पदावली में मधुरनाद का प्रयोग काव्य के प्रत्येक शब्दों में कवि ने बड़ी सजगता से किया है।
- स्वरों की दृष्टि से - पदावली के प्रत्येक पदों का गायन संगीत के सभी सुरों में किया जाता रहा है। इनमें स्वरों के उतार-चढ़ाव की क्षमता विद्यमान है, जो स्वर का प्रमुख लक्षण है।
- सप्तक की दृष्टि से - पदावली का अध्ययन करने पर पता चलता है की पदावली का प्रत्येक पद मन्द, मध्य, तार सप्तक के अंतर्गत आ जाता है। बिना उक्त भेद के भावाभिव्यक्ति संभव नहीं हो सकती।
- गायन की विविध शैलियाँ : गायन की भारतीय संगीत में कई शैलियाँ प्रचलित है। जैसे ध्रुवपद, ख्याल शैली, ठुमरी शैली, लोक-गीत शैली, भजन शैली, गजल कव्वाली शैली आदि। पदावली के गीत लोकगीत एवं भजन शैली के अंतर्गत आते हैं। यद्यपि पदावली के कुछ पद ध्रुवपद, ख्याल, ठुमरी गायन शैली के अंतर्गत आ जाते हैं। उदाहरण के लिए कुछ पद निम्नलिखित हैं :-

ध्रुवपद शैली मे पदों की अनुकूलता-

"देख-देख राधा-रूप अपार, अपुरूष के बिरिह आनि मिला ओल
रिति तल लावनि-सार, अंगाहि अंग अनंग मूरछपत हेरए पठए अधीर
मन मथकोटि मथन करू के जन से हेरी, महि मधि-गीर"[3]

खयाल शैली में पदों की अनुकूलता-

"अभिनव एक्कमल पुल सजना, दोनों नीम के डार
सेओ फूल ओतहि सुखयल सजनी, रसमय पुलक नेवार"[4]

ठुमरी (भाव शैली) में पदों की अनुकूलता-

"पिया मोर बालक हम तरूनी, कौन ला चुकलौह भेलोह जननी
पहरि लैल सारिन एक बहिन क्यीर, पिया के देखे तो मोगध सरीर"[5]

लोकगीत शैली में पदों की अनुकूलता-

"हम घनी कूटनी परिनत नारी, देसहू वास न कहौ विचारी
काहू के फन काहुदिऊ सान, कत न हकारि एल अपमान
कप परमाद छिपा मोर मेल, ओहे योवण कतप चल गेल"[6]

- गीतिकाव्य की दृष्टि से: पदावली गीति- काव्य के विभिन्न लक्षणों से परिपुष्ट है। विद्यापति ने प्रत्येक छंद संगीतमय लिखे हैं।
- लयमात्रा की दृष्टि से: विद्यापति पदावली मात्रिक छंदों का भंडार है संगीत में मात्रिक छंदों को ग्रहण किया जाता है। इसलिए लय मात्रा की दृष्टि से पदावली संगीतोपयोगी कृति सिद्ध हुई है।
- पद की दृष्टि से: संगीत में पदों का गायन होता है। विद्यापति के गीत पद कहलाते हैं। इसलिए उनकी कृति का नाम 'पदावली' है।

- भाव और रस की दृष्टि से: भावों के माध्यम से ही रस निष्पत्ति संभव है। कविवर विद्यापति ने विविध भावों का समावेश अपनी पदावली में किया है। इनकी पदावली इसलिए विभिन्न रसाभास कराने में समर्थ सिद्ध हुई है। पदावली एक संगीतोपयोगी भाव एवं रस सिद्ध कृति है। इसका प्रत्येक पद संगीत के लिए के लिए ही रचा गया है। संगीतज्ञ इन पदों को लेकर विभिन्न भावों तथा रसों की अभिव्यक्ति निश्चय ही कर सकता है।
- अंलकार की दृष्टि से: विद्यापति पदावली में अलंकारों के अधिकांशतः सभी रूप प्राप्त होते हैं। परंतु उनका प्रयोग कवि द्वारा बलात नहीं है। उनमें अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक जान पड़ता है। इस विशेषता के कारण पदावली संगीतानुकूल निर्विवाद बनी पड़ी है।विद्यापति की पदावली संगीत शास्त्र की दृष्टि से निर्धारित मानदंडों की कसौटी पर पूर्णरूपेण खरी उतरती है। उसका प्रत्येक पद, प्रत्येक छंद लय रूपी धागे में स्वर रूपी पुष्पों के साथ पिरोया हुआ हैं। पदावली में रस, छंद, अलंकार, भाषा-शैली, मार्धरता, सौंदर्य आदि समस्त ललित कलाओं की अद्भुत छटा दृष्टिगत होती है। पदावली के गीत, लोक संगीत के माध्यम से जनसाधारण के हृदय को आंदोलित करके उसके मानस मंदिर में समाहित होकर मुखरित हुए हैं।

पदावली में गीति तत्व होने के कारण उसका गीत प्रवाह उत्कृष्ट कोटि का हो गया है। पदावली का प्रत्येक पद गतिमान है जो लयबद्ध होकर जनमानस को आंदोलित कर रहा है। संगीतात्मकता के कारण पदों में जो लोच है, गति प्रवाह है और हृदय को झंकृत कर देने की अपार शक्ति है वह अन्यत्र दुर्लभ हैं। "विद्यापति पदावली के संबंध में प्रोफेसर नलिन का कथन स्पष्ट रूप से प्रकाश डालता है। विद्यापति पदावली मूर्च्छना भरे संगीत की रंगस्थली है और आत्म विस्तृत कर देने वाली अनुभूतियों का साधना मंदिर।"7 विद्यापति ने मुख्यतः मात्रिक छंद लिखे हैं। पदों में ललित्य, गीत, ओज, भाषा में लय आदि का समावेश इन्हीं मात्रिक छंदों के ही योग से आ गया है। विद्यापति को 22, 24, 26, 27, 28 मात्राओं के छंद प्रिय थे। इन्हीं में मात्रिक छंदों में उन्होंने विविध छंदों की रचनाओं की है। परिणामस्वरुप उन रचनाओं को विविध तालों में तालबद्ध किया जा सकता है। संगीत के लिए मात्रिक छंद ही अधिक उपयोगी हैं। पदावली एक ऐसी रचना है जिसमें समस्त भारतीय तालों के अनुकूल पद मिल जाते हैं।

पदावली में रागों के नामों का उल्लेख

पदावली के अंतर्गत निम्न राग-रागनियों का पदों के संदर्भ में उल्लेख प्राप्त होता है जैसे मालव, कोलार, सारंगी, वरली, बसंत, देश, देशाक, शुद्ध केदार, वराली, असावरी इत्यादि यह राग विद्यापति के समय प्रचलित राग प्रतीत होते हैं। विद्यापति संगीतज्ञ भी थे एक स्थान पर प्रस्तुत कथन इस बात की पुष्टि करता है। "विद्यापति की पदावली राग- रागनियों का अपूर्व भंडार है। उनके पदों को विभिन्न रागों में सफलतापूर्वक गया जा सकता है।"8 विद्यापति ने राग - रागनियों के चुनाव में पदों की अनुकूलता का समस्त दृष्टियों से निर्वाह किया है। आज भी बिहार के आधुनिक शास्त्रीय संगीतज्ञों द्वारा आकाशवाणी से विभिन्न राग-रागनियों में विद्यापति के पद गाए जाते हैं। विद्यापति के समस्त काव्य साहित्य को देखने से पता चलता है कि केवल पदावली ही एक ऐसी कृति है जो राग-रागनी की कसौटी पर पूर्ण रूपेण खरी उतरती है। विद्यापति ने इन राग रागनियों को, गीत गोविंद से, कुछ नाथो और सिद्धों के साहित्य से और समकालीन प्रचलित राग-रागनी पद्धति से लिया है।

विद्यापति की पदावली के समस्त पद भारतीय स्वरलिपि में लयबद्ध किये जा सकते हैं। विद्यापति की भक्ति परक रचनाएं जैसे वंदना, प्रार्थना, स्तुति इसके अतिरिक्त बानत जैसी प्राकृतिक वर्णनात्मक पद ध्रुवपद शैली के अंतर्गत स्वरलिपि बद्ध किए जा सकते हैं। पदावली में प्रत्येक छंद को इस प्रकार लिखा गया है जिसमें ध्रुवपद परंपरा का पालन किया गया हो। कविवर विद्यापति ने जिस समय पदावली की रचना की वो ध्रुव पद काल था। अतः स्वाभाविक है कि उनकी रचनाओं में मात्राओं का मापदंड ध्रुवपद में प्रयोग होने वाली विभिन्न मात्राओं के तालों में स्वरलिपि बद्ध की जा सकती है। जैसे चारताल, सूलताल, तीव्रा, ब्रह्मा, लक्ष्मी, गणेश, सवारी आदि। इन समस्त मात्रिक तालों में गाए जाने वाले पद विद्यापति पदावली में मिल जाते हैं।

कविवर विद्यापति का लोकगीतों के विकास के पीछे बहुत बड़ा हाथ है। उनकी पदावली मैथिली लोक शैली में लिखी गई। डॉक्टर पीयूष के शब्दों में "विद्यापति के पदों ने सिद्धों की अपभंरश और जयदेव के संस्कृत गेय पदों तथा सूर एवं अन्य कृष्ण भक्त कवियों के श्रृंगारी पदों के बीच कड़ी का काम करके हिंदी के गेय पदों की परंपरा और रीति परंपरा के इतिहास को पूरा किया।"9 पदावली के लोकगीत दादरा, कहरवा

और खेमटा आदि तालों में लयबद्ध किये जा सकते हैं। मिथिला और बंगाल के मंदिरों, देव स्थानों, घरों तथा लोक सत्संग समाज आदि में इनके लोकगीतों का गायन इन्हीं तालों में होता हैं।

निष्कर्ष

विद्यापति के सभी काव्यों में केवल पदावली ही उनकी एकमात्र ऐसी रचना है जो संगीत और काव्य की कसौटी पर खड़ी उतरती है। पदावली में जहां अनेक पदों में लोकगीत की विशेषताएं निहित है वही बहुत से पद शास्त्रीय संगीत के तत्वों के अनुरूप है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से एक और लोक मंगल की कामना की, वहीं दूसरी और कलात्मक सृष्टि करके साहित्य और कला को एक सूत्र में बांधने का सफल प्रयास किया। इसलिए जितने वह हिंदी साहित्य के लिए गौरवशाली व्यक्तित्व सिद्ध हुए हैं उतना ही संगीत जगत में भी उनका महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यापति ने राधा और कृष्ण के प्रसंग लेकर विभिन्न नवीन, मौलिक चित्र प्रस्तुत किए हैं। जो संगीत और साहित्य दोनों की दृष्टि में अद्वितीय है। पदावली के अतिरिक्त अन्य रचना संस्कृत और अवहट में है। उनका वर्णन विषय साहित्यिक दृष्टिकोण से आवश्य ग्राहय है। परंतु संगीत की दृष्टि से स्वीकार नहीं किया जा सकता।

पदावली में उन्होंने अपने संगीत ज्ञान का परिचय दिया है। राग- रागनियों के नाम दिए हैं। इनमें से कुछ राग आज भी संगीत में अपने प्राचीन नाम रूप को सुरक्षित रखे हुए हैं और कुछ राग अपने नाम वा रूप से दीर्घकाल के प्रभाव के कारण वंचित हो गए। यर्थात में विद्यापति के समय इन रागों का मूल रूप क्या था इस संबंध में कोई शास्त्रीय प्रमाण प्राप्त नहीं होता। पदावली में निर्दिष्ट राग- रागनियों एवं पदों में विभिन्न वाद्य यंत्रों के नाम एवं स्वरों के नाम कुछ इस प्रकार की सामग्री प्रस्तुत करते हैं। पदावली में गेय तत्व का गुण होने के कारण संगीत के मूल सिद्धांत, स्वर, लय आदि के तत्वों का समावेश दृष्टिगोचर होता है। उनके पदों का प्रचार मूल रूप से मिथिला और बंगाल में हुआ। विद्यापति के संगीत सिद्धांतों का बड़ा स्वभाविक मनोवैज्ञानिक तथा स्वामिक चित्रण प्राप्त होता है। इसी समन्वित भाव के परिणाम स्वरुप विद्यापति के काव्यों का हिंदी काव्य जगत के लिए वरदान सिद्ध हुआ है पूर्ववर्ती काव्य से प्रेरणा ग्रहण की है वही समस्त परवर्ती काव्य का प्रेरणा स्रोत बने।

संदर्भ

1. शर्मा, कृष्णदेव, विद्यापति या उनकी पदावली, प्रा0-46, हिन्दी
2. पीयूष, डॉ, कृष्ण नंदन, महाकवि विद्यापति स्थापना या विवेचन, प्री-101, हिंदी
3. विद्यालंकार, कुमुद, विद्यापति पदावली, प्रा.-2, हिन्दी
4. विद्यालंकार, कुमुद, विद्यापति पदावली, प्रा.-323, हिन्दी
5. सिंह, डॉ. श्री प्रसाद, विद्यापति, प्रि-180, हिन्दी
6. सिंह, डॉ. श्री प्रसाद, विद्यापति, प्रि-180-181, हिन्दी
7. नलिन जयनाथ, विद्यापति एक तुलानात्मक समीक्षा, प्रा.-32, हिन्दी
8. नलिन जयनाथ, विद्यापति एक तुलानात्मक समीक्षा, प्रा.-45, हिन्दी
9. नन्द, कृष्ण, महाकवि स्थापना या विवेचना, प्री-45, हिन्दी